NEW ERA AGRICULTURE MAGAZINE

आँवला में लगने वाली प्रमुख बीमारियों का प्रबंधन

सुप्रिया गोपाल नाईक, वेदांत सिंह, सोनम एवं हंस राज वर्मा

परिचय:

आंवला, जिसे भारतीय आंवला या "वंडर फ्रूट" कहा जाता है, भारतीय उपमहाद्वीप की एक महत्वपूर्ण फल फसल है, जो अपनी पोषण और स्वास्थ्यवर्धक गुणों के लिए प्रसिद्ध है। यह फल विटामिन C का अत्यधिक स्रोत है, जो संतरे से भी ज्यादा होता है, साथ ही इसमें कैल्शियम, फास्फोरस, आयरन और मैग्नीशियम जैसे महत्वपूर्ण खनिज भी होते हैं। आंवला का उपयोग पारंपरिक चिकित्सा में फेफड़ों की समस्याओं, अस्थमा, गैस्ट्रिक, मधुमेह, पीलिया, खांसी, सिरदर्द, त्वचा रोग, और बालों के सफेद होने जैसे रोगों के इलाज में किया जाता है। शोधों ने आंवला के हृदय, फेफड़ों, पेट और किडनी पर सुरक्षात्मक प्रभावों को भी साबित किया है।

आंवला के पेड़ विभिन्न बीमारियों का शिकार हो सकते हैं, और इन बीमारियों का सही प्रबंधन न करने पर उत्पादन और गुणवत्ता पर नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है। इसलिए, इन बीमारियों के प्रभावी प्रबंधन के लिए उचित तकनीकों को अपनाना जरूरी है। सही उपचार न होने पर, यह उत्पादन और गुणवत्ता को प्रभावित कर सकता है। इस संदर्भ में आंवला की प्रमुख बीमारियों और उनके प्रबंधन के उपायों की जानकारी दी गई है।

1. पाउडरी मिल्ड्यू (Powdery Mildew)

पाउडरी मिल्ड्यू एक कवक रोग है जो पत्तियों, टहनियों और फलों पर सफेद पाउडर की परत के रूप में दिखाई देता है। यह पौधे की वृद्धि को रोकता है और

सुप्रिया गोपाल नाईक, वेदांत सिंह, सोनम एवं हंस राज वर्मा
परास्नातक छात्र फल विज्ञान विभाग
आचार्य नरेन्द्र देव कृषि एवं प्राद्यौगिकी विस्वविद्यालय, कुमारगंज अयोध्या

फलों की गुणवत्ता को प्रभावित करता है।

प्रबंधन:

- ☛ प्रभावित शाखाओं की छंटाई करें और हवा परिसंचरण में सुधार करें।
- ☛ सल्फर आधारित कवकनाशकों का छिड़काव करें।
- ☛ नमी के स्तर को कम करने के लिए ऊपर से पानी देने से बचें।

2. एन्थ्रेक्नोज (Anthracnose)

एन्थ्रेक्नोज के कारण पत्तियों, फलों और तनों पर काले धंसे हुए धब्बे बनते हैं, जो पौधे की वृद्धि को बाधित करते हैं।

प्रबंधन:

- ☛ संक्रमित भागों की छंटाई करके हटा दें।
- ☛ सुप्त अवस्था में तांबा आधारित फफूंदनाशकों का प्रयोग करें।
- ☛ पेड़ों के बीच उचित दूरी रखें।

3. लीफ स्पॉट (Leaf Spot)

आंवला की पत्तियों पर छोटे काले धब्बे उभरते हैं, जो समय के साथ बड़े हो कर पत्तियों को नुकसान पहुंचाते हैं।

प्रबंधन:

- ☛ कार्बेंडाजिम या कार्बेंडाजिम + मैनकोजेब की 2 ग्राम मात्रा प्रति लीटर पानी में घोल कर छिड़काव करें।

4. बैक्टीरियल ब्लाइट (Bacterial Blight)

इस रोग में पत्तियों पर पानी से लथपथ काले धब्बे बनते हैं, जिससे पत्तियां गिरने लगती हैं।

प्रबंधन:

- ☛ संक्रमित भागों की कटाई-छंटाई करें और उन्हें नष्ट करें।
- ☛ कॉपर ऑक्सीक्लोराइड का छिड़काव करें।

5. फलों का गिरना (Fruit Drop)

इस समस्या के कारण फलों का विकास रुक जाता है और वे जल्दी गिरने लगते हैं।

प्रबंधन:

- ☛ कार्बेंडाजिम या मैनकोजेब की 2 ग्राम मात्रा प्रति लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें।

एकीकृत रोग प्रबंधन (Integrated Disease Management)

प्रभावी रोग प्रबंधन के लिए विभिन्न रणनीतियों को मिलाकर एक समग्र दृष्टिकोण अपनाएं:

- ⇨ **अच्छी कृषि पद्धतियाँ:** रोपण, दूरी और स्वच्छता जैसी अच्छी कृषि पद्धतियाँ अपनाएं।
- ⇨ **जैविक नियंत्रण:** लाभकारी जीवाणुओं और कीटों का उपयोग करें।
- ⇨ **रासायनिक नियंत्रण:** कवकनाशक का उपयोग अंतिम विकल्प के रूप में करें।
- ⇨ **निगरानी:** रोग के लक्षणों के लिए नियमित निरीक्षण करें।
- ⇨ **शिक्षा:** नवीनतम शोध और विकास के बारे में जानकारी प्राप्त करते रहें।

आप इस प्रकार से आंवला के पेड़ों में होने वाली विभिन्न बीमारियों का प्रबंधन कर सकते हैं और खेती में उच्च गुणवत्ता और अधिक उत्पादन प्राप्त कर सकते हैं।

NEW ERA AGRICULTURE MAGAZINE